Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

Original Article

अंधेर नगरी की प्रासंगिकता

डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

सहयोगी प्राध्यापक (हिंदी),

विवेकानंद महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर

Manuscript ID: yrj-140413

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 4
Oct-Nov-Dec.- 2025
Pp. 94 - 101

Submitted: 15 Oct. 2025
Revised: 30 Oct. 2025
Accepted: 20 Nov. 2025
Published: 10 Dec. 2025

Corresponding Author:
डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.22641472

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.22641472

Creative Commons

OPEN ACCESS

आधुनिक युग के तथा पर्यायी रूप से आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखित 'अंधेर नगरी' हिंदी की लोकप्रिय रचनाओं में से एक है। समाज की वास्तविक छवि को अपने भीतर अंकित करनेवाली कालजयी साहित्यिक रचनाएँ हमेशा अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करती रहती है। बदलते परिवेश तथा परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उनके भिन्न-भिन्न अर्थ उद्घाटित होते रहते हैं। 'अंधेर नगरी' में निहित व्यंग्य अथवा चित्रित समस्याएं अपनी प्रासंगिकता के साथ अंग्रेज़ों के शासनाधीन भारत से होकर स्वतंत्र भारत में भी प्रवेश कर चुकी है। एक सीमित परिधि में अत्यंत कुशलता से बुना गया कथानक, सरल भाषा तथा तीखे व्यंग्य के कारण 'अंधेर नगरी' एक कालजयी नाटक सिद्ध हुआ है। राजनीतिक पतन, भ्रष्टाचार, गिरते मानवीय मूल्य, जातिगत पाखंड आदि पर प्रस्तुत नाटक तीव्र व्यंग्य करता है। प्रस्तुत रचना लेखक की सशक्त विचारधारा, वातावरण विशेष की समझ तथा शिल्प और कथानक पर मज़बूत पकड का परिणाम है। कोई भी रखना मन तथा मस्तिष्क को तभी प्रभावित कर सकती है जब उसके भीतर समाज को वास्तविक छावि दिखाई देने लगती है जिसका सर्वोत्तम उदाहरण है - 'अंधेर नगरी'।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*
How to cite this article:
डॉ. सोमनाथ वांजरवाडे. (2025). अंधेर नगरी की प्रासंगिकता. Young Researcher, 14(4), 94 – 101.
https://doi.org/10.5281/zenodo.22641472

जन-चेतना जागृति की ओर संकेत करता 'अंधेर नगरी' हास्य-व्यंग्य से परिपूर्ण एक ऐसा नाटक है जो सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आडंबर पर तीखे कटाक्ष करता है। अंधेर नगरी की मूल्यहीन, अमानवीय तथा अराजक व्यवस्था और वहाँ का चौपट राजा अथति विवेकहीन राजा तत्कालीन तथा

वर्तमान भारत की फैली अराजकता और भ्रष्ट व्यवस्था का प्रनिधित्व करते दिखाई देते हैं।

'अंधेर नगरी चौपट राजा।
टके शेर भाजी टके सेर खाजा।।'[1]

जैसी पंक्तियाँ प्रस्तुत रचना के मर्म को उजागर करने में सक्षम है। साथ ही इसमें अभिव्यक्त समसामायिक संदर्भों को समझना प्रस्तुत इकाई का प्रमुख उद्देश्य है।

भारतेंदु ने 'अंधेर नगरी' की कथावस्तु को बड़ी ही कुशलता से गोवर्धनदास की लालची दृष्टि और चौपट राजा की विवेकहीन बुद्धि इन दो बिंदुओं में विभाजित करने की कोशिश की है। जिनके मेल से पूर्ण कथानक उभरकर सामने आता है। प्रस्तुत रचना में राजसभा का दृश्य विवेक हीन शासन व्यवस्था का प्रमाण है। राज्य के एक सामान्य व्यक्ति को न्याय देने हेतु भ्रष्ट, बुद्धि हीन राजा तथा उसके मंत्रियों द्वारा जिस प्रकार की न्याय प्राक्रिया अपनायी जाती है वह अत्यंत दुखद तथा विचारणीय है। हास्य के आवरण में लिपटा यह दृश्य और इसके भीतर से झाँकती वास्तविकता पाठक को बेचैन कर देती है। बैकुंठ जाने की लालसा में राजा का स्वयं फाँसी पर चढ जाना भारतेंदुयुगीन शासकों जिनमें अंग्रेज़ तथा भारतीय राजा भी शामिल थे, उनके असभ्य आचरण और विवकहीन नीतियों की पोल खोलता है। वर्तमान समय में भी लोकतंत्र के नाम पर अपनी रोटियां सेकने में लगे तथा-कथित नेताओं को देखा जा सकता है। इस दृश्य में राजा के साथ-साथ चित्रित मंत्रीगण तथा सैनिक इन्हीं चालाक नेताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो विवेकहीन नीतियों का तब तक खुलकर विरोध नहीं करने जब तक उन पर कोई आँच न आए।

दूर से सुंदर दिखने वाले नगर की वास्तविकता का पता गोवर्धनदास को तब चलता है जब बिना किसी अपराध के फाँसी का फंदा उसके गले तक आ पहुँचता है। अंत में उसके गुरु का विवेक ही उसका तारणहार बनता है। क्षणिक सुख की चाह में जीवन मूल्यों से समझौता युवाओं को पतन की ओर धकेल सकता है। इस बात की ओर भारतेंदु ने संकेत किया है। जिस नगरी में विवेक-अविवेक, योग्य- अयोग्य में अंतर न हो उस नगरी को अंधेर नगरी कहने में कोई आश्चर्य नहीं है। अंग्रेजी शासनाधीन भारत की स्थिति कुछ ऐसी ही थी। एक और अंग्रेज़ो की दमनकारी नीतियों अन्याय, शोषण से भारतीय जनता त्रस्त थी तो दूसरी ओर देशी राजाओं को विलासिता, उदासीनता, आपसी बैर आदि के चलते भारत में हाहाकार मचा हुआ था। प्रत्येक भारतीय इस स्थिति से उबरकर स्वतंत्र भारत में खुशहाल जीवन जीने का सपना देख रहा था। अंग्रेज़ों को भारत से खदेड़ने का हर संभव प्रयास कर रहा था। समय बदला, स्थितियां बदली भारत एक सशक्त गणतंत्र के रूप में उभरकर सामने आया। सत्ता की बागडोर देशी नेताओं के हाथ में आ गई। इक्कीसवी सदी तक आते-आते नेता के अर्थ तथा कार्यप्रणाली में परिवर्तन हुआ। नेतृत्व का स्थान स्वार्थ तथा भ्रष्ट प्रवृत्ति ने ले लिया परिणामस्वरूप

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

अंधेर नगरी जैसी स्थिति निर्माण होने की संभावना दृढ होती जा रही है।

भारतेंदु ने प्रस्तुत अंक के अंत में महंत द्वारा कहीं गयी पंक्तियों के माध्यम से सत्ता तथा विवेकहीन व्यवस्था के दुष्परिणामों की ओर संकेत किया है -

"जहाँ न धर्म न बुद्धि नहिँ,
नीति न सुजन समाज
ते ऐसहि आपुहि नसे
जैसे चौपट राजा।"[2]

जिन जीवन मूल्यों तथा विशेष रूप से संस्कृति के बल पर भारत विश्वभर में प्रसिद्ध था वही जीवन मूल्य एवं संस्कृति अंग्रेज़ी शासन काल में तेज़ी से नष्ट हुए। तत्कालीन समय में पाप-पुण्य, सत्य-असत्य, विवेक-अविवेक, सदाचार-दुर्व्यवहार आदि में कोई अंतर नहीं था। अंग्रेज़ अपने स्वार्थ को पूरा करने हेतु भारतीयों को एक ही लाठी से हाँकने के आकांक्षी थे- 'फुट डालो और राज करो' की नीति को अपनाकर अंग्रेज़ तेज़ी से भारत पर कब्ज़ा कर रहे थे। मानवीय मूल्यों का पतन हो रहा था। समाज में उथल-पुथल मची हुई थी। जैसे-

"टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचै
टके के वास्ते झूठी गवाही दें
टके के वास्ते पाप को पुण्य मानै
टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावै
वेद, धर्म, कुल, मरजादा।
सच्चाई, बडाई सब टके सेर।"[3]

बाज़ार के दृश्य में कुंजडिन अलग अलग सब्जियों के नाम पुकारते हुए कहती है-

"हिन्दुस्तान का मेवा फूट और बैर।"[4]

उपर्युक्त पंक्ति के माध्यम से लेखक ने उन दो महत्वपूर्ण बिंदुओं की ओर संकेत किया है जिनके सहारे अंग्रेज़ भारत पर लगभग डेढ सौ सालों तक शासन करने में सफल रहे। कुछ ऐसी ही स्थिति वर्तमान भारत में भी दिखाई दे रही है। अपने आप को आधुनिक कहलाने वाला मनुष्य भौतिक संसाधनों की चाह में सामाजिक मूल्यों को कुचलता हुआ विकास की दिशा में कदमताल कर रहा है।

वर्तमान समय में मनुष्य की कथनी और करनी में अंतर आ गया है। समाज में झूठों का, भ्रष्टों का बोलबाला है। सच बोलने वाला को दुत्कारा जा रहा है। सत्य, इमानदारी, कर्तव्यपरायणता, दया, करूणा, त्याग, सेवा, सहयोग आदि जीवन मूल्यों को दुत्कारा जा रहा है। मानवीय संवेदनाओं तथा संस्कृतिक धरोहर की और अनदेखी की जा रही है।

एक स्वस्थ संतुलित, विकसित समाज तथा पर्यायी रूप से देश की पहचान होते है उसके सामाजिक मूल्य। परंतु जहाँ अर्थ सामाजिक मूल्यों पर, हावी होता है, मर्यादाओं का अतिक्रमण करने लगता है वहाँ स्वस्थ्य समाज अथवा देश की कल्पना नहीं की जा सकती। सभ्यता और संस्कृति ही समाज का मूलाधार है। अंधेर नगरी में स्थित अँधेरा इन्हीं जीवन मूल्यों के अभाव का है जिसे बडी कुशलता के भारतेंदु चित्रित करते हैं-

"सेत सेत सब एक से, जहां पर कपूर कपास।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

ऐसे देस कुदेस में, कबहुँ न कीजे बास ।।
कोकिल बायस एक सम, पंडित मूरख एक ।
इन्द्रायन दाड़िम विषय, जहाँ न नेकु विवेक ।।"[5]

अतः 'अंधेर नगरी' प्रतीक है उस समाज, देश का जो अपने मूल्यों को खोकर भौतिक चकाचौंध को ही अपना सर्वस्व समझ रही हैं।

भ्रष्टाचार:

अपनी नीतियों के साथ धीरे-धीरे भारत में पैर जमाते अंग्रेज़ों ने क्रूरता की सारी सीमाएँ पार कर दी थी। वे स्वार्थी तो थे ही साथही अपने भ्रष्ट आचरण से भारतीय जनता को रौंदने की पुरजोर कोशिश कर रहे थे। अंग्रेज़ी शासकों का आतंक और भ्रष्टाचार विकराल रूप धारण करने लगा था। अंग्रेज़ों के साथ-साथ बनिया, महाजन, जमीदार आदि भी सर्वसामान्य जनता का शोषण कर रहे थे।

अंधेर नगरी में चित्रित बाज़ार का दृश्य तत्कालीन समाज और पर्यायी रूप से वर्तमान में पनपते भष्टाचार का चित्र प्रस्तुत करता है। बाजार में चने बेचनेवाले घासीराम से लेकर नारंगीवाली, कुंजडिन, हलवाई, मुगल, पाचकवाला, मछलीवाली, जातवाला (ब्राह्मण) आदि तक सभी अपना सामान 'टके शेर बेच रहे थे। घासीराम के शब्दों में अंग्रेजों के भ्रष्ट आचरण की अनुगूंज सुनाई देती है-

"चना हाकिम सब जो खाते ।
सब पर दूना टिकस लगाते ।।"[6]

सब्जियाँ बेच रही कुंजडिन के स्वर में भी भीषण वास्तविकता के दर्शन होते हैं -

"जैसे काजी वैसे पाजी ।
रैयत राज़ी टके सेर भाजी ।।"[7]

कुंजडिन द्वारा 'फूट' और 'बैर' को हिंदुस्तान का मेवा कहना भारत की गुलामी के मूल कारण की ओर संकेत करता है।

'अंधेर नगरी' में चित्रित भ्रष्ट व्यवस्था आज इक्कीसवी सदी में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी स्वतंत्रता पूर्व भारत में थी। नाटक में छिपी पुनुरुत्थानवादी एवं नैतिकतावादी दृष्टि को छोड दिया जाए तो उसमें निहित यथार्थ लगभग उसी रूप में आज भी मौजूद है। तब की भाँति आज भी मनुष्य की बुध्दि, कौशल, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता, सत्य आदि का मूल्य 'अर्थ' (पैसा) के सामने दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। शासक स्व-हित के लिए धर्म- जाति के नाम पर फुट-बैर रूपी बीज बो रहे हैं। आम आदमी टैक्स (GST) के बोझ तले दबा जा रहा है। अपने आपको हाकिम अर्थात शासक अथवा शासन व्यवस्था का अंग समझनेवाला प्रत्येक व्यक्ति अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने का हरसंभव प्रयास कर रहा है। भारतेंदु ने इस स्थिति का वर्णन आज थे लगभग एक शतक पहले पाचकवाले के माध्यम से बखूबी किया है -

"चूरन अमले सब, जो खावै।
दूनी रिश्वत तुरंत पचावै।।
चूरन सभी महाजन खाते ।
जिससे जमा हज़म कर जाते ।।

चूरन पुलिस वाले खाते।
सब कानून हज़म कर जाते ॥[8]

अपने चूरन का बखान कर पाचकवाला अंग्रेज़ों के स्वार्थी एवं भ्रष्ट आचरण पर प्रहार करता हुआ कहता है -

"चूरन साहब लोग जो खाता।
सारा हिंद हजम कर जाता ॥"[9]

इस बाज़ार में जाति एवं धर्म भी बिकाऊ है। 'अर्थ' के आगमन से ईमान- धरम भी डगमगाने लगा है-

"जात ले जात, टके सेर जात।
एक टका दो, हम अभी अपनी जान बेचते हैं
टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जाए
और धोबी को ब्राह्मण कर दे
टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दे
टके के वास्ते ब्राह्मण को मुसलमान
टेक के वास्ते हिंदू से क्रिस्तान।"[10]

अर्थ की चमक के आगे 'सत्य' की रंगत भी फिकी पड़ने लगी है। झूठ फल-फूल रहा है, जिसे चित्रित कराते हुए कहते हैं-

"टके के वास्ते झूठ को सच करें
टके के वास्ते झूठी गवाही दे।"[11]

अंधेर नगरी में चित्रित बाज़ार नगर के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। मूलतः यह बाज़ार अनबूझ राजा की नगरी में स्थित अंधेरे का एक मुख्य कारण है। यह बाज़ार प्रतीक है प्रस्तुत नगरी में फैली अराजकता का। यहां पर बिकनेवाली प्रत्येक वस्तु का समान मूल्य इस नगर की अनुशासनहीनता का संदेश देता है। यहां कोई नियम-कानून नहीं है। 'साधन' के रूप में जन्मा बाज़ार मानवी जीवन का 'साध्य' बन चुका है जिसकी झलक प्रस्तुत नाटक में दिखाई देती है।

आलोच्य नाटक में चित्रित बाज़ार की हूबहू छवि है- वर्तमान बाज़ार। वैश्वीकरण नामक संकल्पना का जन्म, आर्थिक उदारीकरण रूपी मायाजाल, भौतिक संसाधनों की लालसा, आधुनिकता अथवा उत्तर-आधुनिकता की आड में जीवन मूल्यों का क्षरण आदि सभी को मिलाकर एक नवीन संकल्पना वर्तमान जीवन में फल-फूल रही है जिसका नाम है- 'बाज़ारवाद'। बाजारवाद का बोलबाला हर तरफ हैं जहाँ सिर्फ और सिर्फ मुनाफ़ा देखा जा रहा है। जहाँ मुनाफ़ा की बात आती हैं वहाँ पर सबसे पहले विवेक मर जाता है और जहाँ विवेक मर जाता है वहाँ न्याय, इंसानियत कागज की शोभा बनकर रह जाते हैं। आज २१ वीं सदी जो विज्ञान की सदी कहलाती है। इस सदी में मनुष्य ने कई सारी चीजों का आविष्कार कर समाज जीवन को सहज और सुचारु बनाने में काफी हद तक मदद की है इसी सदी का एक बड़ा चेहरा हैं बाजारवाद। जो आज हर घर तक पहुँच गया है। इस बाजार की छवि आए दिन सोशल मीडिया और जीतने भी जनसंचार के सभी माध्यम कर रहें हैं। वह अत्यंत सोचनीय है। इसी बाजार जो की एक शोषण का सबसे बड़ा हथियार है उसके बारे में भारतेंदु ने सालों पहले इस नाटक के माध्यम से आगाह किया है वह भारतेंदु की दूरदर्शिता को दर्शाता है।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

वर्तमान समय में बाज़ार ही सर्वेसर्वा है। जिसने अपने आपको बाज़ार के अनुकूल नहीं ढाला है उसे 'आउट डेटेड' अर्थात पिछाडा हुआ कहा जा रहा है। आज बाजार ही मानवी जीवन की पहचान बन चुका है। अंधेर नगरी के बाज़ार की तरह वर्तमान बाज़ार में भी हर चीज़ बिकाऊ है। बाज़ारवाद तथा उसके मूल में हर चीज़ बिकाऊ है। बाज़ारवाद तथा उसके मूल में पनप रहें भ्रष्टाचार की भीषण वास्तविकता के रूप में यदि 'अंधेर नगरी' को देखा जाए तो विशेष आश्चर्य नहीं होगा।

विवेकहीन समाज:

एक छोटी सी लोककथा को आधार बनाकर लिखा गया प्रस्तुत नाटक अनेक गंभीर विषयों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। कहते हैं कि जब कोई मनुष्य अथवा मानवी समुदाय अपने विवेक एवं नीति मूल्यों को परे रखकर कृत्य करने लगता है तब अन्याय करना अथवा सहना ही उसका स्वभाव बन जाता है। 'अंधेर नगरी'में भी एक ऐसे विवेकहीन समाज का चित्रण देखने को मिलता है जहाँ पर योग्य-अयोग्य, विवेक-अविवेक, गुणवान-मूर्ख के बीच कोई अंतर नहीं है। जहाँ हर चीज़ का मूल्य 'टके सेर' है। जहाँ का राजा निरंतर भोग विलास में डूबा रहता है। जिसे जनता के हित-अहित की कोई चिंता नहीं है।

'जैसी राजा वैसी प्रजा' को चरितार्थ करता हुआ गोवर्धनदास प्रस्तुत नाटक का मुख्य पात्र है जो सर्वसामान्य व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। अपने गुरू द्वारा समझाने के बावजूद वह अंधेर नगरी की चकाचौंध से अभिभूत होकर वहीं रहने का निश्चय करता है। टके सेर से मिलनेवाली हर वस्तु गोवर्धनदास को आनंद देती है-

"गुरु जी, ऐसा तो संसार भर में कोई देश नहीं है। दो पैसा पास रहने ही से मजे में पेट भरता है। मैं तो इस नगर को छोडकर नहीं जाऊंगा...।"[12]

गोवर्धनदास उस रूढ़िवादी भारतीय जनता का प्रतीक है जो स्वार्थपूर्ति की लालसा में शोषण का शिकार है। आलस्य और विवेकहीनता के कारण शोषकों के चंगुल में फंसी हुई है। संकीर्ण मनोवृत्तिवाले गोवर्धनदास को अंधेर नगरी में फैली विवेकहीनता की कोई चिंता नहीं है बल्कि वह क्षणिक सुख की लालसा में आनंदित होकर गाने लगता है-

"वाह वाह! अंधेर नगरी चौपट राजा
टका सेर भाजी टका सेर खाजा।"[13]

नाटक के अंत में विपत्ति से घिरे गोवर्धनदास को अपनी ग़लती का अहसास होता है। लालच का शिकार गोवर्धंदास बड़ी मुसीबत में फ़स जाता है। विवेकहीनता पर पछताता गोवर्धनदास उस सामान्य भारतीय का प्रतिनिधि है जो क्षणिक सुख की चाह में जीवन मूल्यों से समझौता कर लेते हैं। आज हमे कई गोवर्धनदास दिखाई देंगे जो अपने लालच के कारण शोषण का शिकार होकर मुसीबत में फंस चुके हैं।

तत्कालीन समाज में कुरीतियों तथा अंधविश्वास का बोलबाला था। पूजा-पाठ तो

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

अंधविश्वासी थी ही परंतु आलोच्य नाटक में चित्रित मुखिया (राजा) प्रजा से कई गुणा बढकर अंधविश्वासी था। एक विशेष मुहूर्त में मृत्यु प्राप्त करने से बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है इस अंधविश्वास में राजा स्वेच्छा से फाँसी स्वीकार कर लेता है। अतः राजा की विवेकहीनता किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि संपूर्ण व्यवस्था के विवेक हीनता की प्रतीक है। यह वह अंधापन है जो अन्याय और आमानुषता को जन्म देता है।

विडंबना है कि,अंधेर नगरी' में चित्रित विवेकहीनता के दर्शन वर्तमान में तथाकथित बुद्धिजीवियों में भी होते हैं। प्रसिद्ध यंग्यकार हरिशंकर परसाई का कथन इस बात को और भी पुष्ट करता है। परसाई लिखते है- "इस देश के बुद्धिजीवी शेर है, लेकिन वें सियारों की बारात में बैंड बजाते हैं...।" अर्थात अपने-आप को विवेकसंपन्न, सुशिक्षित समझनेवाला वर्तमान समाज स्वार्थपूर्ति हेतु विवेकहीनना के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है।

धार्मिक मूल्यों में विकृति:

धर्म का मूल उद्देश्य है-विश्वास, आत्मिक शुद्धि तथा मानवता परंतु बदलते समय के साथ धर्म के मूल सिद्धांतों में भी परिवर्तन हुआ। आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों की अपेक्षा बाह्यडंबर, अंधविश्वास, तंत्र-मंत्र, जादूटोना आदि को धर्म की परिधि में देखा जाने लगा। परिणामस्वरूप धर्म तथा धार्मिक मूल्य अपने मूल उद्देश्य से भटक गए। धर्म के आधार पर समाज उच्च तथा निम्नवर्गीयों में बंट गया। सत्य, दया, करुणा का संदेश देनेवाला धर्म ही शोषण का सबसे प्रभावी हथियार बन गया। एक समय तो ऐसा आया जहाँ 'अर्थ' (पैसा) ने 'धर्म' में प्रवेश कर लिया और धर्म मात्र एक कर्मकांड बनकर रह गया। आज इस वैज्ञानिक कहलनेवाली सदी में जहाँ साक्षारता का प्रमाण लगभग ७५ फीसदी के आसपास हैं वहाँ पर धर्म का स्वरूप इस तरह दूषित होना अपने आप में चौकनेवाला है। आज देश में लगभग सभी दंगे फसाद की जड़ यहीं धर्म बन गया है। धर्म के इस बदलते स्वरूप का उल्लेख प्रस्तुत नाटक में मिलता है-

"एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचेत हैं।"[14]

यहां धर्म और अर्थ का मूल्य समान है। धार्मिक और नैतिक दायित्वों का स्थान भौतिक मुखों ने ले लिया है। सबसे बड़ी बात है कि धर्म में अर्थ और अर्थ में धर्म ने प्रवेश कर लिया है। तभी तो अधर्म सर चढ़कर बोल रहा हैं। जिसे नाटक में प्रस्तुत करते हुए कहते हैं -

"वेद, धर्म, कुल-मरजादा, सच्चाई-बडाई सब टके सेर।"[15]

यहां धार्मिक मूल्यों के क्षरण को समाज की नैतिक गिरावट के रूप में चित्रित किया गया है। धर्म और नीति पर लोभ का हावी होना सामाजिक पतन का प्रमाण है। धर्म अब आचरण की वस्तु न रहकर स्वार्थ सिध्दि का साधन बन गया है-

"टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान,
टके के वास्ते हिंदू से क्रिस्तान।"[16]

जिस समाज में धर्म और नीति का स्थान लोभ और अविवेक ले लेते हैं उस समाज को अंधेर नगरी बनने में देर नहीं लगती। वर्तमान में भी धर्म को सामाजिक वर्चस्व प्राप्ति के हथियार के रूप में देखा जा रहा है। जिसे असहिष्णूता तथा सांप्रदायिक हिंसा की स्थिति निर्माण हो रही है।

अंत: कह सकते है कि, 'अंधेर नगरी' समसामयिक संदर्भों का जिवंत दस्तावेज़ है। इसमें अभिव्यक्त समस्याओं का संबंध केवल स्वतंत्रतापूर्व भारत से नहीं है बल्कि प्रस्तुत नाटक में व्यक्त यथार्थ और विडंबना में वर्तमान जनविरोधी नीतियों की भी अनुगूंज सुनाई देती है। मात्र छः दृश्यों में विभाजित छोटी सी कथावस्तु के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक स्थिति का प्रभावी चित्र अंकित करने की क्षमता भारतेंदु जैसे विरले लेखक में ही हो सकती है। चर्चित नाट्यालोचक गिरीश रस्तोगी 'अंधेर नगरी' की प्रासंगिकता के संदर्भ में लिखते हैं-

"कुछ रचनाएँ अपनी प्रासंगिकता हमेशा सिद्ध करती रहती है और कभी पुरानी या बासी नहीं पड़ती। बदलते हुए परिवेश, बदलती परिस्थितियों में उनके नए-नए अर्थ प्रतिबिंबित होते रहते हैं। इस अर्थ में अंधेर नगरी का संबंध न एक देश से है, न ब्रिटिश शासन मात्र से, न एक कालखंड से। चाहे स्वतंत्र भारत के बदलते शासन की परंपरा का लंबा इतिहास हो, चाहे विश्व के किसी भी कोने का, अंधेर नगरी हर काल, हर स्थान का यथार्थ है। निश्चित ही 'अंधेर नगरी' एक ऐसी कहानी रचना है जिसने समाज की वास्तविक छवि को अपने भीतर उकेर कर हिंदी साहित्य जगत में विशेष स्थान पाया है। तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार करते हुए वर्तमान विसंगतियों की ओर ध्यान आकर्षित करना प्रमुख नाटक की विशेषता है। इसमें भारतेंदु ने केवल तत्कालीन स्थितियों को ही व्यक्त नहीं किया है बल्कि उससे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को वाणी प्रदान की है। विवेकहीनता, स्वार्थी प्रवृत्ति, भ्रष्टाचार, गिरते सामाजिक और धार्मिक मूल्यू, बदलती राजनीतिक नीतियां आदि के परिपेक्ष्य में 'अंधेर नगरी में निहित व्यंग्य सर्वकालिक है।

संदर्भ :

1. अंधेर नगरी – भारतेंदु हरिश्चंद्र पृ.६
2. वहीं पृ. ६३
3. वहीं पृ. ४४
4. वहीं पृ. ४१
5. वहीं पृ. ४८
6. वहीं पृ. ४०
7. वहीं पृ. ४१
8. वहीं पृ. ४२,४३
9. वहीं पृ. ४३
10. वहीं पृ. ४३, ४४
11. वहीं पृ. ४३
12. वहीं पृ. ४८
13. वहीं पृ. ४५
14. वहीं पृ. ४३
15. वहीं पृ. ४४
16. वहीं पृ. ४४